INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :6.514(2021); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:10, ISSUE:4(7), April :2021
Online Copy Available: www.ijmer.in
Digital certificate of publication: http://ijmer.in/pdf/e-Certificate%20of%20Publication-IJMER.pdf

आधुनिक जनसंचार माध्यम और सूचना प्रौद्योगिकी में हिन्दी का प्रचार–प्रसार

प्रो. गुरजीत कौर, हिन्दी विभाग, गुरू नानक कॉलेज बुढलाडा, मानसा (पंजाब) भारत।

सारांश

आधुनिकता के दौर में सूचना एक शक्तिशाली साधन बन गया है। एक राष्ट्र उतना ही विकसित माना जाता है जितने प्रभावी उसके पास संचार माध्यम होते हैं। कंप्यूटरों पर भी हिन्दी का व्यापक प्रयोग हो रहा है। आज हिन्दी का प्रयोग इंटरनेट और ई–मेल में संभव हो गया है तथा हिन्दी में अनेक पोर्टल भी प्रारम्भ हो गए हैं। भाषा शिक्षण की दिशा में भारत सरकार के राजभाषा विभाग ने सी–डेक, पुणे के सहयोग से 'लीला हिन्दी प्रबोध' नामक साफ्टवेयर तैयार किया। इस साफ्टवेयर के माध्यम वाक्यों, शब्दों और वर्णों के सही उच्चारण का अभ्यास किया जा सकता है। इसकी ऑडियो–विडियो सुविधा इंटरनेट पर उपलब्ध है। वेब दुनिया के कार्यक्रमों में मेल, चैट, खोजें हिन्दी में उपलब्ध हैं। सूचना प्रौद्योगिकी की विश्व क्रान्ति में आज हिन्दी ने अपना विशेष स्थान ग्रहण कर लिया है। इंटरनेट सूचनाओं का विशाल भंडार है। इसके माध्यम से सूचनाओं का आदान–प्रदान होता है। इसके द्वारा एक साथ विश्व के अनेकों कंप्यूटर जुड़कर एक अनोखे रिश्ते में बंध जाते हैं। मनोरंजन की दुनिया में भी इंटरनेट का महत्वपूर्ण योगदान है। हिन्दी जनसंचार माध्यमों में हम हिन्दी पत्रकारिता, हिन्दी सिनेमा, हिन्दी रेडियो, हिन्दी वेब दुनिया, हिन्दी न्यूज चैनल, हिन्दी विज्ञाप न, हिन्दी ई–पत्रिका, हिन्दी शोध–पत्र, हिन्दी किताबें, हिन्दी पोस्टर, विज्ञापन, बैनर्स, कम्प्युटर तथा मोबाईल आदि को शामिल कर सकते हैं।

मूल शब्द– आधुनिकता, जनसंचार, प्रौद्योगिकी, इंटरनेट, सूचना, मीडिया, टेक्नालॉजी, हिन्दी साहित्य आदि।

प्रस्तावना

भाव–सम्प्रेषण की प्रकिया को संचार कहा जा सकता है। संचार के लिए कोई–न–कोई माध्यम आवश्यक होता है। जिसके द्वारा व्यक्ति अपने विचार सम्प्रेपित कर सके। प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रोनिक मीडिया, फोटोग्राफिक मीडिया, इंटरनेट आदि प्रचलित जनसंचार माध्यम हैं। कोई भी व्यक्ति, समूह या समाज वार्तालाप या संवाद किए बिना अपने विचारों का आदान–प्रदान नहीं कर सकता। मनुष्य अपने भावों, अनुभवों को संचार के द्वारा दूसरों तक पहुँचाता है और दूसरों के विचार स्वयं ग्रहण करता है ताकि प्राप्त सूचनाओं के द्वारा उसके जीवन का सम्पूर्ण विकास हो सके।

जनसंचार शब्द अंग्रेजी भाषा के 'कम्यूनिकेशन' शब्द का पर्याय है। 'कम्यूनिकेशन' शब्द जो कि लैटिन भाषा के 'कम्यूनिस' शब्द से बना है। जिसका शाब्दिक अर्थ है– समझ का साँझा आधार। संचार शब्द की उत्पत्ति 'चर' धातु से हुई है, जिसका अर्थ है–चलना या एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचना। संचार अनुभवों की साझेदारी है। यह एक ऐसी जीवंत प्रकिया है जिसमें सूचना देने और प्राप्त करने वाले की सकिय भागीदारी होती है। संचार की प्रकिया जब एक विशाल जनसमूह को साथ लेकर चलती है तो उसे जनसंचार कहते हैं। जनसंचार से संबंधित आलोक जी कहते हैं कि ''जनसंचार का उद्देश्य है विचारों एवं भावों की अभिव्यक्ति को मनुष्य समाज में, सांझा करना और फिर उन भावों एवं विचारों से लाभान्वित होना। संचार का अर्थ ही है फैलाव यानि विस्तार।''(1) जब किसी संदेश को यांत्रिक प्रणाली से कई गुणा बढ़ा दिया जाए और उसे बड़ी संख्या में लोगों तक पहुँचाया जाए तो उसे जनसंचार या मास कम्यूनिकेशन कहा जा सकता है। इसमें जन–जन तक पहुँचाए जाने वाले संदेश आते हैं।

जनसंचार के माध्यमों के द्वारा हिन्दी का प्रचार–प्रसार

शताब्दियों से शिक्षा के प्रचार–प्रसार के लिए मुद्रण माध्यम प्रयुक्त होते रहे हैं परन्तु आज इलेक्ट्रोनिक और कंप्यूटर के युग में दृश्य–श्रव्य संसाधनों के समन्वित रूप का बड़े स्तर पर प्रयोग हो रहा है। मुद्रित सामग्री के माध्यम

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :6.514(2021); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:10, ISSUE:4(7), April :2021
Online Copy Available: www.ijmer.in
Digital certificate of publication: http://ijmer.in/pdf/e-Certificate%20of%20Publication-IJMER.pdf

से शिक्षा और ज्ञान में वृद्धि हुई है। वर्तमान समय में मनोरंजन कार्यकमों के अतिरिक्त विश्वविद्यालय अनुदान आयोग शैक्षिक कार्यकम जी टी वी के एजुकेशन, कंप्यूटर, शिक्षण आदि कार्यकम लोकप्रिय हो रहे हैं। उपग्रह टी. वी और संचार माध्यमों के फैलाव में वृद्धि से शिक्षा का क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत हो रहा है। हिन्दी भापा में विश्वद्यिालय अनुदान आयोग द्वारा संचालित राष्ट्रव्यापी कक्षाएँ भी चल रही हैं। हिन्दी में वर्तनी शोधन के लिए 'ओशो स्पैल बांइडर' तथा हिन्दी शब्दकोश– हिन्दी शब्द सागर का विकास किया है। इसका प्रयोग ऐपल मैकिन्टॉश कम्प्यूटर पर किया जा सकता है। ओशो स्पैल बाइंडर एक हिन्दी प्रूफ रीडर है जो 1000 शब्द प्रति मिनट की गति से जाँच कर सकता है। इसी प्रकार सी–डैक ने एक हिन्दी वर्तनी जाँचक सॉफटवेयर भी तैयार किया है। यह 'इस्की' और 'पी.सी.इस्की' दोनों ही वर्णकमों का प्रयोग कर सकता है। सुन्दर और आकर्पक लिखाई के लिए ओशो कम्यून इन्टरनेशनल पूणे ने 'अमृत', 'अभिलापा', 'बसन्त' आदि हिन्दी के फॉन्टस तैयार किए हैं। इसके अतिरिक्त एसीईएस कन्सल्टेण्टस द्वारा विकसित 'आकृति–95' सॉफ्टवेयर में हिन्दी के अनेकों फॉन्टस विकसित किए हैं जो विविध कुँजी पटलों का विकल्प, टाइपिंग गति, विन्डो, डास आदि पर सुविधा प्रदान करता है। डॉ आउम् विकास ने राजभापा आयोग की सहायता से कम्प्यूटर द्वारा अनुवाद का एक प्रारूप तैयार किया, जिसमें भारत की असंख्य भापाओं का हिन्दी में अनुवाद हो सकता है। कंम्प्यूटर के द्वारा ही हिन्दी का इतना प्रचार–प्रसार संभव हो सका है। हिन्दी के प्रचार–प्रसार के लिए जनसंचार के तीन वर्ग हैं प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रोनिक मीडिया और फोटोग्राफिक मीडिया।

प्रिंट मीडिया में हिन्दी

प्रिंट मीडिया जनसंचार की आरम्भिक और महत्वपूर्ण कड़ी है। समाचार–पत्र, पत्र–पत्रिकाएँ आदि प्रिंट मीडिया के अन्तर्गत आते हैं। प्रिंट मीडिया के द्वारा सूचनाओं का आदान–प्रदान हिन्दी भापा में किया जा रहा है। इसमें प्रकाशित शब्दों के द्वारा लोगों के अज्ञानता रूपी अंधकार को दूर भगाया जाता है। आज समाचार–पत्र जहाँ लोगों के लिए सूचनाओं का मुख्य स्रोत है, वहाँ वह जनसाधारण के विचारों की अभिव्यक्ति का भी माध्यम हैं। आधुनिक साहित्य की बात करें तो डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी कहते हैं कि ''आधुनिक होना नवलेखन की पहली शर्त है। इसके साथ ही साथ साहित्य के संबंध में एक पूर्णतः नवीन निश्चित तथा रचनात्मक दृष्टिकोण होना दूसरी आवश्यकता है।''(2) हिन्दी पत्रकारिता के क्षेत्र में सन् 1826–1867 का काल उदय काल माना जाता है। पंडित युगल किशोर ने हिन्दी की पहली पत्रिका 'उदन्त मार्तण्ड' निकालकर हिन्दी के प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया। शिवप्रसाद सितारेहिन्द, राजा राममोहन राय ने पत्रकारिता के द्वारा हिन्दी के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। लोगों को जागृत किया।

सन् 1867 में 'कवि वचन सुधा', 1873 में हरिश्चंद्र चद्रिका, बालबोधिनी, हिन्दी प्रदीप, ब्राहम्ण, सरस्वती, भारत पत्रिका आदि पत्रिकाओं ने हिन्दी के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। पत्र–पत्रिकाओं के द्वारा जनता में नई चेतना का संचार हुआ। महात्मा गाँधी ने हिन्दी भापा को राष्ट्रीय स्तर पर लाने के लिए अहिन्दी प्रदेशों राष्ट्र भापा प्रचार समिति वर्धा तथा दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार समिति की स्थापना की। आज भी दैनिक समाचार–पत्रों जैसे दैनिक–जागरण, नवभारत दैनिक, नवभारत टाइम्स, नई दुनिया आदि प्रकाशित हो रहे हैं। समाचार–पत्रों, पत्रिकाओं के प्रकाशन के द्वारा जनसंचार और भी प्रभावी बन पड़ा है। 'नई दुनिया' जैसे समाचार–पत्र इंटरनेट से जुड़कर नई प्रौद्योगिकी का इस क्षेत्र में प्रयोग कर रहे हैं। इनके अपने पोर्टल हैं। आजकल समाचारों की कंपोजिंग कंप्यूटर से की जाती हैं। हिन्दी भापा में प्रूफ–संशोधन के लिए कुछ नये चिह्न भी बने हैं। प्रूफ–संशोधन की अशुद्धियाँ, शीर्पक की कंपोजिंग और पृष्ठों की रूप–सज्जा कंप्यूटर के द्वारा ही की जाती है। भारत में हिन्दी में समाचार–पत्रों की गिनती दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। ''भारत के समाचार पत्रों की पंजीयक की 2001 ई. में जारी रिपोर्ट के मुताबिक 2000 ई. में पंजीकृत समाचार पत्रों की संख्या 49145 तक पहुँच गई। 2000 ई. में प्रकाशित पत्रों में सबसे ज्यादा 19685 हिन्दी के थे।''(3) जनहित को ध्यान में रखते हुए प्रिंट मीडिया ने हिन्दी के प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। एम.फिल, पी–एच.डी और डी.लिट् की उपाधि के लिए शोध–ग्रन्थों को कंप्यूटर की सहायता से ही तैयार किया जाता है।

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :6.514(2021); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:10, ISSUE:4(7), April :2021
Online Copy Available: www.ijmer.in
Digital certificate of publication: http://ijmer.in/pdf/e-Certificate%20of%20Publication-IJMER.pdf

इलेक्ट्रोनिक मीडिया में हिन्दी

इलेक्ट्रोनिक मीडिया के अन्तर्गत रेडियो, टलीविजन, सैटेलाइट, केबल टी.वी, कैसेट्स इत्यादि माध्यम हिन्दी के प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। इसके अन्तर्गत श्रव्य और दृश्य–श्रव्य माध्यम आते हैं। रेडियो एक कान्तिकारी माध्यम है जिसके द्वारा दूर–दराज में बैठे जन–समुदाय तक संदेश को पहुँचाया जा सकता है। यह एक सुलभ जनसंचार माध्यम है। आम आदमी भी इसको खरीद सकता है और सूचनाएँ ग्रहण कर सकता है। सूचना प्रौद्योगिकी में इसका महत्वपूर्ण स्थान है। ज्ञान–विज्ञान से सम्बद्ध लेखों, वार्ताओं को सुनकर श्रोता के ज्ञान में वृद्धि होती है।

दृश्य–श्रव्य माध्यमों में हिन्दी

इलेक्ट्रोनिक मीडिया में दृश्य–श्रव्य माध्यमों के द्वारा हिन्दी का विकास हो रहा है। हिन्दी भाषा में बहुत सी विधाएँ जैसे नाटक, उपन्यास, रेखाचित्र, संस्मरण, कहानी, एकांकी आदि को धारावाहिक के रूप में टेलीविजन पर दिखाया जाता है। इन माध्यमों ने विश्व की दूरियों को खत्म कर दिया है। टेलीविजन द्वारा दृश्यों को आवाज के साथ दिखाये जाने से कथित सत्य अत्यन्त प्रबल रूप से स्थापित होने लगा है। संचार के क्षेत्र में उपग्रह के प्रवेश के बाद तो संचार के लगभग सभी माध्यमों में तेजी से परिवर्तन आया है। दृश्य–श्रव्य माध्यमों ने सूचना, शिक्षा तथा मनोरंजन के अनगिनत द्वार खोल दिए हैं जिसके कारण लोगों में जागृति आई है। हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में यह माध्यम अन्य माध्यमों की अपेक्षा अधिक लोकप्रिय हो गया है क्योंकि यह एक साथ आँख, कान, मन और मस्तिष्क पर अपना प्रभाव और छवि अंकित करने में समर्थ है। इसके संवाद साक्षर–निरक्षर सभी लोगों के लिए होते हैं।

कहानी और उपन्यास दो ऐसी विधाएँ है जिन्हें फिल्मों के रूप में रूपान्तरित किया गया है। भारत में रविन्द्रनाथ ठाकुर, शरतचन्द्र, विभूतिभूषण बैनर्जी, प्रेमचन्द, फणीश्वरनाथ रेणु, भीष्म साहनी, मोहन राकेश, धर्मवीर भारती, उषा प्रियंवदा आदि अनेक कथाकारों की रचनाओं का दृश्य माध्यमों में रूपान्तरण हुआ है। भारत के विख्यात साहित्यकारों की प्रसिद्ध रचनाओं पर जैसे 'आन्नद मठ' तथा 'दो बीघा जमीन' जैसी फिल्में बनीं। प्रेमचन्द की प्रसिद्ध रचनाओं में से सेवासदन, गबन, गोदान, निर्मला, कर्मभूमि, शतरंज के खिलाड़ी और कफन जोकि यथार्थवादी कहानी है इस पर भी फिल्में और धारावाहिक बन चुके हैं। इनके माध्यम से जनता को संदेश देकर जागृत करना है। सामाजिक बुराईयों और कुरीतियों को दूर करके एक उज्ज्वल भविष्य की कामना करना है। हिन्दी साहित्य की विधाओं को दृश्य–श्रव्य माध्यमों के द्वारा लोगों तक पहुँचाने का मुख्य उद्देश्य दर्शक को आकर्षित और प्रभावित करना है ताकि वह अपने जीवन में उचित सूचनाओं को प्राप्त करके अपने भविष्य को उज्ज्वल बना सके। ''भाषा में भी जबरदस्त बदलाव आया। दूरदर्शन के माध्यम से अलग–अलग रूपों में बोली जाने वाली हिंदी का प्रचार हुआ तो जी.टी.वी के माध्यम से आसान बोलचाल को हिंदी के नाम पर 'स्टार डस्ट' पत्रिका का शुरूआत की गई।''(4)

फोटोग्राफिक मीडिया में हिन्दी

फिल्म फोटोग्राफिक मीडिया के अन्तर्गत आती है। हिन्दी साहित्य जगत में प्रसिद्ध साहित्यकारों की रचनाओं पर बनीं फिल्मे हिन्दी के प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। फोटोग्राफिक मीडिया के द्वारा भी सूचनाओं का आदान–प्रदान होता है। फोटोग्राफी व्यक्ति के अन्दर छुपी कला और रचनात्मकता की अभिव्यक्ति का अच्छा जरिया है। टेकनालॉजी की तरक्की के साथ ही कम्युनिकेशन के माध्यम भी विकसित हो गए हैं। आज हर छोटे–बड़े आयोजनों में, फैशन शो में, मीडिया के क्षेत्र में हर जगह फोटोग्राफी का चलन बढ़ गया है। आजकल डिजिटल फोटोग्राफी की माँग बढ़ गई है। प्रिंट, इलेक्ट्रोनिक और इंटरनेट मीडिया में फोटो की अहम भूमिका होती है। विज्ञापन टी.वी चैनलों और समाचार–पत्रों के लिए वरदान सिद्ध हो रहे हैं। ''विज्ञापन शब्द 'वि' और 'ज्ञापन' शब्दों से मिलकर बना है। 'वि' से तात्पर्य है– विशेष तथा ज्ञापन से तात्पर्य है ज्ञान कराना या सूचना प्रदान करना। इस प्रकार विज्ञापन का अर्थ हुआ– किसी तथ्य या बात की विशेष जानकारी अथवा सूचना प्रदान करवाना।''(5) यह पूरी तरह रचनात्मकता

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :6.514(2021); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:10, ISSUE:4(7), April :2021
Online Copy Available: www.ijmer.in
Digital certificate of publication: http://ijmer.in/pdf/e-Certificate%20of%20Publication-IJMER.pdf

पर आधारित कार्य है। पोर्ट्रेट में एक चित्र, एक व्यक्ति या लोगों के समूह को वास्तविकता में प्रस्तुत किया जाता है, जिसमें कलात्मक साधनों के साथ–साथ ही साहित्य और विज्ञान शामिल होते हैं। लैंडस्केप ललित कला की एक शैली है। फोटोग्राफी एवं वीडियोग्राफी के माध्यम से विश्व के विभिन्न भागों में रह रहे लोगों, उनके रहन–सहन, संस्कृति से लोगों को परिचित करवाना मुख्य ध्येय है। फोटोग्राफी अभिव्यक्ति का एक माध्यम होने के साथ–साथ यह जीवन और समाज में बदलाव लाने का भी साधन है।

नेटवर्कों का नेटवर्क : इंटरनेट और हिन्दी

आज का युग सूचनाओं का युग है। ज्ञान एक शक्तिशाली हथियार के रूप में हमारे जीवन में महत्व रखता है। इस ज्ञान को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाने का माध्यम है–इंटरनेट। इंटरनेट का प्रमुख कार्य है– सूचनाओं का आदान–प्रदान करना। सूचनाओं का यह विशाल भण्डार है। दुनिया के लगभग सभी विषयों का ज्ञान इस जनसंचार माध्यम के पास है। इंटरनेट क्लाइंट और सर्वर के बीच में संचार माध्यम का कार्य करता है। यह चौबीस घंटे दुनिया के प्रत्येक कोने में सेवा के लिए हमेशा तत्पर रहता है। इंटरनेट विश्वव्यापी कंप्यूटरों का नेटवर्क है। यह लाखों–करोड़ों प्रयोक्ताओं को सूचनाएँ पहुँचाता है। इस समय हमारे सभी के पास चौबीस घंटे हमारे निर्देशानुसार कार्य करने वाला माध्यम इंटरनेट या विश्वव्यापी वेब है। हमारी जिन्दगी के एक–एक कीमती पल का सदुपयोग करते हुए इसने हमारे जीवन में चार–चाँद लगा दिए हैं। ''कंप्यूटर ने 'इंटरनेट' के आविष्कार की जमीन तैयार की और इंटरनेट के आविष्कार ने संचार माध्यमों को नया स्वरूप प्रदान करते–करते 'न्यू मीडिया' का तिलस्मी जाल का निर्माण किया। सूचना कान्ति को सफलता प्रदान करने वाले इंटरनेट का आविष्कार लियोनार्ड क्लीन रॉक ने किया। वस्तुतः इंटरनेट रूस और अमेरिका के मध्य चलने वाले शीत युद्ध के दौरान संचार–व्यवस्था को बनाये रखने के प्रयासों का परिणाम है। जॉन एफ कैनेडी के समय में क्यूबा संकट के फौरन बाद अमेरिका ने महसूस किया था कि परमाणु हमले के खतरे से वह भी सुरक्षित नहीं है। उन्हें आशंका थी कि अमेरिका के पड़ोसी देश क्यूबा में रूस चोरी–छिपे परमाणु मिसाइलें पहुँचाने की कोशिश कर चुका है और कभी भी वह अमेरिका पर दागी जा सकती हैं। इस तरह के हमले में सबसे ज्यादा प्रभावित होने वाली चीज संचार–सम्पर्क व्यवस्था होती हैं। संचार–सम्पर्क की बाधा युद्धों के समय सबसे अधिक हानिप्रद होती है। सैन्य उपयोग के लिए संचार–व्यवस्था जिसे आरपानेट (ARPANET) कहा जाता था, उसका विकसित रूप आज इंटरनेट नाम से आम आदमी की सेवा में प्रस्तुत है।''(6) इस प्रकार इंटरनेट संचार का एक सशक्त माध्यम है। विश्वव्यापी वेब (WWW) इंटरनेट का बहुत ही उत्तम और सफल माध्यम है।

हिन्दी के प्रमुख इंटरनेट पोर्टल

विश्व पटल पर वेब दुनिया पर देवनागरी लिपि सामने आई है। इससे ही भारतीय भाषाओं और उनकी लिपियों को विशेषकर देवनागरी लिपि को विशेष स्थान मिला है। विश्व के पहले हिन्दी पोर्टल का विकास वेब दुनिया डाट कॉम लिमिटेड ने किया है। यह 23 सितम्बर, 1999 को इंटरनेट पर उपलब्ध हो गया है। विनय छजलानी इस पोर्टल के जनक थे। उनका इस पोर्टल को सामने लाने का एक ही उद्देश्य था–एक हिन्दी भाषी परिवार की इंटरनेट की जरूरतों की पूर्ति करना। इस पोर्टल के माध्यम से 'वेब दुनिया' समाचार, संस्कृति, मनोरंजन, व्यवसाय आदि क्षेत्रों में लाखों–करोड़ों लोग घर बैठे हिन्दी भाषा में सूचनाओं की प्राप्ति का सकते हैं। हिन्दी के फॉन्ट और यूनी कोड, आई. एस.सी.आई.आई तथा इंस्कीप्ट जैसे मानक को आधार बनाकर 'वेब दुनिया' ने अपने कदम आगे बढ़ाए हैं। 'वेब दुनिया' में संदेश कंप्यूटर के रोमन के की–बोर्ड से टाईप करने से परदे पर हिन्दी (देवनागरी लिपि) में नजर आता है। पहले हिन्दी सर्च इंजन 'वेब दुनिया खोज' का लोकार्पण 23 फरवरी 2000 को हुआ, जिसके माध्यम से दुनिया के किसी भी क्षेत्र में व्यक्ति हिन्दी भाषा में सूचनाएँ प्राप्त कर सकता है। इस लाभप्रद प्रणाली ने यह सिद्ध कर दिखाया है कि देश की सारी भाषाएँ सूचना प्रोद्योगिकी के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने में समर्थ हैं। इस प्रकार हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि को विश्व पटल पर लेकर आने का श्रेय 'नई दुनिया' इंदौर को है।

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :6.514(2021); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:10, ISSUE:4(7), April :2021
Online Copy Available: www.ijmer.in
Digital certificate of publication: http://ijmer.in/pdf/e-Certificate%20of%20Publication-IJMER.pdf

कंप्यूटर, इंटरनेट और वेबसाइट में देवनागरी के प्रयोग से नई–नई संभावनाएँ उभर रही हैं। GIST SHELL एक साफ्टवेयर समाधान है जो भारतीय भाषाओं के मुद्रण को सरल बनाता है। यह भारतीय भाषाओं के साथ काम करने में Data processing के लिए सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। GIST शब्द ग्राफिक्स एण्ड इंटेलिजेंस वेस्ट स्क्रिप्ट टेक्नोलॉजी के प्रथम अक्षरों से बना है। जिस्ट कार्ड की सहायता से एक ही कुंजी पटल पर भारतीय लिपियों की स्थापना कर दी गई जिसके परिणामस्वरूप हिन्दी के अतिरिक्त अन्य भारतीय भाषा जानने वाला व्यक्ति उसी कंप्यूटर पर काम कर सकता है। इस प्रौद्योगिकी ने ऐसा कंप्यूटर उपलब्ध करा दिया है जिससे अंग्रेजी के अतिरिक्त भारत की प्रमुख भाषाओं में टंकण किया जा सकता है।

लीला हिन्दी प्रबोध नामक एक ऐसा साफ्टवेयर भारत सरकार के राजभाषा विभाग ने पूणे विश्वविद्यालय परिसर में स्थित सी–डैक की सहायता से तैयार किया है जिसके द्वारा देवनागरी वर्ण की लेखन विधि ग्राफिक्स के रूप में चित्रित होती है। इस साफ्टवेयर की सहायता से वर्णों का रचना विधि और उसके उच्चारण के बारे में आवश्यक ज्ञान प्राप्त होता है। इसके साथ–साथ वर्णों, शब्दों तथा वाक्यों का मानक उच्चारण सुना जा सकता है और जितनी बार चाहे उनका अभ्यास भी किया जा सकता है। लीला पैकेज के माध्यम से अब देवनागरी के माध्यम से भारतीय भाषाओं को सीखा जा सकता है। मल्डीमीडिया 'गुरू' भी पर्याप्त उपयोगी है। 'अनुवादक' साफ्टवेयर अंग्रेजी के मूल पाठ को हिन्दी में अनुवाद करके व्याकरण के मूलभूत नियमों का पालन करता है। इसमें तीन अलग–अलग शब्दकोष हैं जिसमें डेढ़ लाख शब्द हैं। यह मुद्रित पत्र में अंकित शब्दों को पहचान सकता है। मुद्रित पाठ को 'स्कैन' करके फाइल कर सकता है। यह एक शब्द के कई विकल्प प्रस्तुत कर सकता है जिसमें से उपर्युक्त शब्द का चुनाव कर सकते हैं। देवनागरी लिपि में मुद्रण के लिए लिपि एम.टी–691 का प्रयोग किया जा सकता है जिसमें एक मिनट में चार सौ पंक्तियाँ मुद्रित होती हैं। उच्चकोटि के प्रकाशन कार्य हेतु ISFOC नाम के फॉन्ट का भी निर्माण हुआ है। स्पैल चेकर और ऑन लाइन शब्दकोश के साथ ई–मेल और वेब की सुविधा भी देवनागरी में उपलब्ध है।

लाइब्रेरी नेटवर्क

लाइब्रेरी नेटवर्क एक ऐसी प्रकिया है जिसके माध्यम से एक लाइब्रेरी दूसरी लाइब्रेरी से जोड़ती है। इस प्रकार कई पुस्तकालय आपस में जुड़कर अपने संसाधनों और सूचनाओं का आदान–प्रदान करते हैं। इसके माध्यम से कम से कम लागत में अधिक से अधिक सूचनाओं एवं सेवाओं में वृद्धि एवं सूचनाओं को जल्दी प्राप्त किया जा सकता है। सूचना और पुस्तकालय नेटवर्क 'इनफिलबनेट' का एक स्वायत्त अंतर विश्वविद्यालय केन्द्र है। 1991 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा शुरू किया गया यह एक प्रमुख राष्ट्रीय कार्यकम है जिसका मुख्य कार्यालय गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद के परिसर में है। नवीनतम प्रौद्योगिकी पर जोर देना, ज्ञान का प्रभावी और कुशल उपयोग करने के लिए शैक्षणिक संस्थानों में लोगों के लिए नेकवर्क बनाए रखना इसका मुख्य उद्देश्य है। विश्वविद्यालय में विरासत दस्तावेजों के डिजिटलीकरण और ई–प्रारूप में सामग्री जैसेः इलेक्ट्रॉनिक शोध निबंध और शोध प्रबंध, शोध लेख, तकनीकी रिपोर्टें, अवधारणा–पत्र आदि के निर्माण को बढ़ावा देना भी इसके मुख्य उद्देश्यों में से एक है।

इन्फिलबनेट सेन्टर संसाधन सहभागिता को बढ़ावा देने हेतु विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं संस्थानों के संग्रह की जानकारी अपनी डाटाबेस सेवा के माध्यम से उपलब्ध करवाता है। इसने देश के विश्वविद्यालयों के ग्रन्थालयों की एक संघ–सूची विकसित की है जिसे इंडकैट के नाम से जाना जाता है। भारतीय विश्वविद्यालयों की ऑनलाइन संघ–सूची किताबों, शोध–ग्रन्थों और भारत के प्रमुख विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में उपलब्ध पत्रिकाओं का ऑनलाइन लाइब्रेरी कैटलाग है। इन्फिलबनेट को स्थापित करने के लिए सूचना और पुस्तकालय नेटवर्क, पुस्तकालयों और विश्वविद्यालयों में सूचना केन्द्रों, डीम्ड विश्वविद्यालयों, कालेजों, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग सूचना केन्द्रों, राष्ट्रीय महत्व के अनुसंधान और विकास संस्थाओं आदि को जोड़ने के लिए एक कंप्यूटर संचार नेटवर्क की स्थापना करना इसका मुख्य उद्देश्य है। डेलासिस, डेल–डॉस, डेल–मार्क, डेल–प्लस डेलनेट द्वारा विकसित सॉफ्टवेयर हैं। डेलनेट की सदस्यता कोई भी पुस्तकालय जो डेलनेट के अन्य सदस्य पुस्तकालयों से पुस्तकों को प्राप्त करने, किसी लेख की फोटोग्राफी

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :6.514(2021); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:10, ISSUE:4(7), April :2021
Online Copy Available: www.ijmer.in
Digital certificate of publication: http://ijmer.in/pdf/e-Certificate%20of%20Publication-IJMER.pdf

प्राप्त करने की सुविधा ले सकता है। वर्तमान में डेलनेट के 4626 सदस्य हैं जिसमें दिल्ली के 240 पुस्तकालय, देश के अन्य भागों के 4366 पुस्तकालय तथा अन्य देशों के 23 पुस्तकालय सम्मिलित हैं।

वीडियो कॉन्फ्रैंसिंग

संचार के क्षेत्र में वीडियो कॉन्फ्रैंसिंग एक आधुनिकतम तकनीक है। इस नवीनतम तकनीक के तहत विश्व में रहने वाले और विभिन्न संस्थानों के दो या दो से अधिक व्यक्ति किसी भी स्थान पर कंप्यूटर एवं संबंद्ध उपकरणों की मदद से एक दूसरे को कंप्यूटर स्क्रीन पर देखते हुए आपस में संवाद स्थापित कर सकते हैं। साथ ही इस बातचीत के दौरान किसी भी प्रकार के दस्तावेज अथवा अन्य कागजी सूचनाओं का आदान–प्रदान भी कंप्यूटर के माध्यम से कर सकते हैं। वास्तव में वीडियो कान्फ्रेसिंग से तात्पर्य है दो दूरस्थ व्यक्तियों द्वारा संवाद स्थापित करने की प्रकिया में दृश्य एवं श्रव्य दोनों अनुभवों को प्राप्त करना। भारत में विदेश संचार निगम लि. द्वारा 1993 से ही विडियो कॉन्फ्रैंसिंग सेवा की शुरूआत कर दी गई थी। विदेश संचार निगम लि. ने दिल्ली, चेन्नई, कोलकाता एवं मुंबई के कार्यालयों में चार सार्वजनिक वीडियो कान्फ्रैंनसिंग केन्द्र स्थापित किए हैं, जो सुविधानुसार क्षेत्रों को चुनकर वहाँ उच्च स्तर की सेवाएँ प्रदान करते हैं। वर्तमान में इस सुविधा का प्रयोग चिकित्सा अनुसंधान, उच्च स्तरीय वार्ताओं, दूरस्थ शिक्षा कार्यकमों आदि में किया जा रहा है। वीडियो कॉन्फ्रेन्सिंग को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय बनाने के लिए 'इंटरनेशनल मल्टी मीडिया टेली कॉन्फ्रेसिंग कंसोर्टियम' द्वारा विशेष प्रयास किए जा रहे हैं।

निष्कर्ष

निष्कर्षतया कहा जा सकता है कि जीवन का प्रत्येक क्षेत्र जनसंचार से जुड़ा हुआ है और जनसंचार से कोई क्षेत्र अछूता नहीं है। कंप्यूटर ही हर भाषा को अपने साथ जोड़ सकता है। आज इंटरनेट हमारे दैनिक जीवनचर्या की छोटी–छोटी चीजों से लेकर वैश्यिक जीवन के बड़े–बड़े कार्यों में सहायक होता है। सूचनाएँ, मनोरंजन, व्यापार, कलाएँ, शिक्षा, अनुसंधान, खेल, यातायात आदि क्षेत्रों में इंटरनेट का बहुमूल्य योगदान है। सेल्यूलर टेलीफोन ने संचार के क्षेत्र में कांति ला दी है। इसने तो टेलीफोन पर बातचीत करने की पूरी प्रकिया ही बदल दी है। भारत में अधिकांश सेल्यूलर फोन सेवा प्रदाता कंपनियाँ GSM प्रौद्योगिकी का प्रयोग कर रही हैं। जनसंचार के माध्यम ज्ञान के प्रसार, शिक्षा के प्रचार–प्रसार में, समय के उचित उपयोग में, विश्व के साथ सम्पर्क स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. आलोक डॉ. ठाकुरदत्त शर्मा, हिन्दी पत्रकारिता एवं जनसंचार, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009, पृष्ठ सं. 33।
2. चतुर्वेदी डॉ. रामस्वरूप, समकालीन हिन्दी साहित्य विविध परिदृश्य, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ सं. 22।
3. चौबे कृपाशंकर, पत्रकारिता के उत्तर– आधुनिक चरण, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005, पृष्ठ सं. 13।
4. गोदरे डॉ. विनोद, प्रयोजनमूलक हिन्दी, वाणी प्रकाशन, 2009, नई दिल्ली, पृष्ठ सं. 210।
5. सूद डॉ. हरमोहन लाल, डॉ. देवेन्द्र कुमार, हिन्दी भाषा प्रयोजनमूलकता एवं आयाम, वागीश प्रकाशन, जालंधर, 2010, पृष्ठ सं.170।
6. सोनटक्के, डॉ. माधव, प्रयोजनमूलक हिन्दी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2004, पृष्ठ सं. 206।

Filename:	19
Directory:	C:\Users\DELL\Documents
Template:	C:\Users\DELL\AppData\Roaming\Microsoft\Templates\Normal.dotm
Title:	
Subject:	
Author:	Windows User
Keywords:	
Comments:	
Creation Date:	12/21/2020 11:11:00 AM
Change Number:	17
Last Saved On:	4/30/2021 1:52:00 PM
Last Saved By:	Windows User
Total Editing Time:	62 Minutes
Last Printed On:	5/1/2021 4:26:00 PM

As of Last Complete Printing

Number of Pages:	6
Number of Words:	1 (approx.)
Number of Characters:	8 (approx.)